11 OCT 6 2026.qxd 10-10-2026 20:25 Page 1

दिल्लीकी अभेद्य किलेबंदी

मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) ज्ञानेश कुमारके इस्तीफे और एसआईआर रोकनेकी मांगको लेकर शनिवारको जंतर-मंतरपर प्रदर्शनको देखते हुए प्रशासन पूरी तरह सतर्क और चाक-चौबन्द रहा। किसी भी अप्रिय घटनाको नियंत्रित करनेके लिए राजधानी दिल्लीकी अभेद्य किलेबंदी की गयी थी। इस दौरान प्रदर्शनमें शामिल होने जा रहे ६०० समर्थकोंको अलग-अलग जगहोंसे हिरासतमें ले लिया गया, जबकि यूट्यूबर ध्रुव राठीको उनके गुरुग्राम स्थित निवाससे ही हिरासतमें ले लिया गया। प्रदर्शनके लिए प्रशासनने अनुमति नहीं दी है, इसके बावजूद काकरोच जनता पार्टी समर्थक जंतर-मंतर पहुंचनेकी कोशिश कर रहे हैं, जिन्हें पुलिस हिरासतमें ले रही है। जंतर-मंतरपर बुलाये गये पार्टीके प्रदर्शनमें शामिल होनेके लिए पहुंचे सीजेपीके फाउण्डर अभिजीत दीपके, आशुतोष रांका और सौरव दासको दिल्ली एयरपोर्टपर फ्लाइटसे ही हिरासतमें ले लिया गया। प्रदर्शनकारियोंको रोकनेके लिए प्रशासनकी सख्तीका अनुमान इसीसे लगाया जा सकता है कि दिल्लीकी २५० ट्रेने निरस्त कर दी गयी हैं और ४५ मेट्रो स्टेशनोंको बन्द कर दिया गया। जंतर-मंतरके चार किलोमीटर दायरेमें शुक्रवार रात दस बजेसे २४ घण्टे यानी शनिवार रात दस बजेतक इण्टरनेट सेवा बन्द कर दी गयी। स्कूल-कालेज बन्द कर दिये गये और परीक्षाओंके कार्यक्रमोंमें बदलाव कर दिये गये हैं। प्रदर्शनसे निबटनेके लिए ३८ हजारसे ज्यादा जवान तैनात किये गये हैं। काकरोच जनता पार्टीके पिछले प्रदर्शनमें हिंसासे सबक लेते हुए सतर्क पुलिस शनिवारको जंतर-मंतरपर प्रस्तावित विरोध प्रदर्शनको लेकर पूरा अहतियात बरत रही है। दूसरी ओर प्रदर्शनसे एक दिन पहले यह मुद्दा सर्वोच्च न्यायालय पहुंच गया। इस सन्दर्भमें मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति सूर्यकांतकी अध्यक्षता वाली पीठका यह प्रश्न अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि यदि पुलिसने प्रदर्शनकी अनुमति देनेस इनकार कर दिया तो इसे चुनौती क्यों नहीं दी गयी। पीठने दो-टूक कहा कि यदि प्रदर्शनकी अनुमति नहीं मिली है तो यह प्रदर्शन अवैध होगा। शीर्ष न्यायालयकी इस चेतावनीसे प्रदर्शनकारी भी सहमे दिखे। विरोध प्रदर्शनके एक दिन पूर्व नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधीके नेतृत्वमें विपक्षी दलोंके दस सांसदोंने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मूसे मुलाकात कर सीईसीके इस्तीफेकी मांग की। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि इस मामलेमें राष्ट्रपतिको विवादमें घसीटा जा रहा है। यह विपक्षी दलोंकी लगातार चुनावमें हारकी हताशा और निराशाको दर्शाता है। विपक्षको अपनी हारके लिए आत्ममंथन करनेकी जरूरत है।

भारतवंशीको नोबेल

आजके दौरमें जब दुनियाके कोने-कोनेमें युद्ध, संघर्ष और अशान्तिका काला साया मंडरा रहा है, तब २०२६ का नोबेल शान्ति पुरस्कार एक बेहद प्रासंगिक सन्देश देता है। भारतीय मूलकी दक्षिण अफ्रीकी न्यायविद् नवनेथम 'नावी' पिल्लईको यह प्रतिष्ठित सम्मान मिलना इस बातका प्रमाण है कि स्थायी शान्ति केवल हथियारोंसे नहीं, बल्कि न्याय, मानवाधिकार और जवाबदेहीपर टिकी होती है। रंगभेदके क्रूर दौरमें दक्षिण अफ्रीकामें पली-बढ़ी नावी पिल्लईका पूरा जीवन अन्यायके सामने न झुकने और कानूनकी ताकतपर भरोसा रखनेका उदाहरण है। अन्यायके खिलाफ संघर्षका उनका सफर अन्तरराष्ट्रीय न्यायिक संस्थाओं और संयुक्त राष्ट्रतक पहुंचा। युद्ध अपराधों, मानवाधिकारके खिलाफ अपराधों और नरसंहार जैसे गम्भीर मामलोंमें जवाबदेही सुनिश्चित करनेकी दिशामें उनकी भमिका इस विश्वासको मजबूत करती है कि कोई भी व्यक्ति या सत्ता कानूनसे ऊपर नहीं होना चाहिए। उन्होंने नेल्सन मंडेला जैसे महान नेताओंकी कानूनी पैरवी करनेसे लेकर रवांडा नरसंहार और यौन हिंसा जैसे गम्भीर अपराधों सहित अन्तरराष्ट्रीय आपराधिक अदालतोंमें ऐतिहासिक भूमिकाएं निभानेतक हमेशा यह साबित किया है कि न्यायकी ताकत हर तानाशाही और जुल्मसे बड़ी होती है। दोषियोंको हर हालमें कानूनके कटघरेमें खड़ा करना है। आज जब कई शक्तिशाली देश और राष्ट्राध्यक्ष अन्तरराष्ट्रीय संधियों और कानूनोंको ताकपर रखकर अपनी ताकतका प्रदर्शन कर रहे हैं, तब नावी पिल्लईका यह सम्मान वैश्विक समुदायको यह याद दिलाता है कि कानूनके सार्वभौतिक सिद्धान्त किसीके लिए भी झुकने नहीं चाहिए। यह पुरस्कार उन सभी पीड़ितोंके लिए एक उम्मीदकी किरण है, जो अन्यायकी आंधीमें अपनी आवाज खो चुके हैं। नावी पिल्लईको मिला नोबेल शान्ति पुरस्कार केवल एक व्यक्तिके असाधारण कैरियरका सम्मान नहीं है, बल्कि यह पूरी मानवताको दिया गया एक सन्देश है कि शान्तिका मार्ग न्याय, समानता और कानूनके शासनसे ही होकर गुजरता है।

लोक संवाद

मांकी आराधना

महोदय,-मानवीय सृष्टि ऊर्जासे लबरेज होने जा रही है। दसों दिशाएं मातृवन्दनाके सुरोंसे सजनेको तैयार है। उपासनाके एक नये संस्करणकी शुरुआत मां दुर्गाके स्तवन पूजनसे होगी। उपासनाका यह पर्व देशभरमें बड़े ही धूमधामसे मनाया जाता है। मातृशक्तिको समर्पित इस पर्वमें जनजीवनमें ऊर्जाकी स्थापना होती है। समय निकालकर लोग मांके चरणोंमें बैठते हैं तो मां भी उनकी झोली खुशियोंसे भरनेमें देर नहीं लगाती हैं। मां दुर्गाके नौ स्वरूपोंकी पूजाके द्वारा शक्तिकी याचना की जाती है। समाजमें फैले विकारोंके उन्मूलन हेतु पवित्र विचारोंकी सृष्टिका निर्माण इस पर्वपर होता है। प्रतिपदा तिथिसे नवरात्रिका पावन पर्व शुरू हो जायेगा। मां दुर्गाके एक एक स्वरूपकी हर दिन पूजा-अर्चनाका विधान है। 'यं यं चिन्तयति कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।' ऐसा श्लोक दुर्गा सप्तशतीमें आता है जिसका अर्थ है कि मांकी उपासना उनके भक्तोंकी सभी इच्छाएं पूरी कर देती है। देवी भागवतमें एक प्रसंग आता है जिसमें मां भगवती भगवान श्रीकृष्णके ऊपर आये संकटको टालती हैं। बात उस समयकी है जब भगवान कृष्ण द्वारिकाधीश हुए, उनके राज्यमें सतराजीत नामका एक व्यक्ति था जो सूर्य जीका उपासक था। सूर्य देवने उसकी पूजासे प्रसन्न होकर उसे स्यामंतक नामकी मणि भेंट की जो रोज स्वर्ण मुद्राओंको देने वाली थी। जब कृष्णको इस बातकी खबर लगी तो उन्होंने सतराजीतसे वह मणि यह कहकर मांगी कि इस मणिकी उसे क्या आवश्यकता है यह मणि राजाके पास रहेगी तो राजकोष समृद्ध होगा। लेकिन सतराजीतने भगवान श्रीकृष्णको स्यामंतक मणि देनेसे इनकार कर दिया, कथा आती है कि उसीके बाद एक दिन अचानक सतराजीतका मृत शरीर जंगलमें प्राप्त हुआ और स्यामंतक मणिका कोई अता-पता नहीं लग रहा था। लोगोंमें यह बात फैल गयी कि मणिको जबरन प्राप्त करनेके लिए कृष्ण जीने सतराजीतको मार दिया होगा और मणि स्वयं रख ली होगी। सचाईका पता लगानेके लिए कृष्ण जंगलकी ओर प्रस्थान कर गये। कुछ दिन जब वापस नहीं लौटे तो वसुदेवने मां भगवतीकी विशेष पूजा की और भगवान कृष्ण जी जंगलसे सकुशल मां भवानीकी कृपासे आ गये और मणिकी चोरीका लांछन भी उनके ऊपरसे हट गया। हम जीवोंकी कोई क्या कहे मांकी करुणा तो देवताओंका भी उद्धार करती रही है। महिषासुर और शुम्भ-निशुम्भ जैसे दुर्दान्त दैत्योंका विनाश करने वाली भगवतीकी कृपा उनके भक्तोंके सभी आदिदैविक, आदिभौतिक और आदिदैविक कष्टोंका निवारण कर देती है। मांकी कृपा, करुणा अपरम्पार है। नवरात्रिके पावन अवसरपर माताके चरणोंमें अपना सुख-दुःख निवेदित करनेको माताके भक्त तैयार हैं। गांव-गांव, शहर-शहर माताकी सुन्दर झांकियोंके पाण्डाल सजाये जा रहे हैं जहां नवरात्रिभर मांकी ममताभरी छांवमें भजन कीर्तन और स्तवनका क्रम चलता रहेगा। बालिकाओंको माताके रूपोंमें देखनेकी दृष्टि भी नवरात्रिके पर्वपर समाजको मिलती है। दुर्गा पूजाके बहाने ही सही नारी सम्मानकी अवधारणाकी एक लकीर भी स्वतः खिंचती दिखाई देती है। दुर्गा पूजा समाजको नारी शक्तिका अहसास भी कराती है। नवरात्रि पर्व केवल आध्यात्मिक अर्थोंमें ही सीमित नहीं रह जाता, बल्कि सामाजिक स्तरपर वह व्यक्ति व्यक्तिके अन्तर्मनकी नौदिवसीय यात्रा है, जिसमें उसके जीवनकी मलिनताका परिष्करण एक एक दिन करके होती है और नौदिवसीय इस मानसिक विकारोंके शोधनके उपरांत जब अंतसमें सद्गुणोंका प्रादुर्भाव हो जाता है तो विजयादशमीके दिन अज्ञानता और अवगुणोंका रावण मारा जाता है। **-रमा निवास तिवारी,वाया ईमेल।**

आस्तिकताकी दिव्य अभीप्सा

प्रकृति मां है। मां प्रथमा है। हम सब मांके अंग हैं। मांका ही विस्तार हैं। मां न होती तो हम न होते। मां सृष्टि प्रकृतिकी आदि-अनादि अनुभूति है। मां दिव्य है। मांका अनुभव दिव्यता है। तैत्तिरीय उपनिषद्के ऋषिने मांको देवता कहा है। देवता दिव्यताकी ही घनीभूत अनुभूति है। जहां-जहां दिव्यता, वहां देवता। प्रकृतिका सर्वोत्तम है दिव्यता।

❐ हृदयनारायण दीक्षित

पृथ्वी प्रकृतिका ही अंश है इसलिए पृथ्वी भी माता है। जल सृष्टि सृजनका प्राचीन घटक है। ऋग्वेदमें जल भी माताएं-आप: मातरम् हैं। माता अपने स्वभावसे ही दाता एवं विधाता है। वे अपने प्रेम प्रवाहका प्रतिदान नहीं लेती। जीवन प्रकृतिका अनुग्रह है। इसमें जल है, अग्नि, वायु, आकाश और पृथ्वीके अंश हैं। प्रकृति देवी है। माता है। इस माताका ऋण है हमपर। अनुकम्पाके प्रति धन्यवादी बने रहना भारतीय संस्कृति है। प्रकृतिका दोहन, शोषण यूरोपयी सभ्यता है। प्रकृतिका पोषण, संवर्द्धन भारतीय परम्परा है। व्रत, ध्यान आदि आस्थाके विषय हैं। मुख्य बात है-प्रकृतिमें मां देखनेकी अनुभूति। यह अनुभूति सर्वभूतेषु मातृरूपेण प्रतीति है। यही देवी उपासना है।

देवी उपासना प्रकृतिका ही नीराजन है। दुर्गा सप्तशती (पांचवे अध्याय) में कहते हैं, जो परम दिव्यता देवी मांके रूपमें हरेक तत्वमें उपस्थित है, उन्हें अनेक बार नमस्कार है-या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमो नम:। यह दिव्यता अनेक रूपोंमें भी प्रकट होती है, अनेक भावोंमें भी उगती है। ऋषि गाते हैं, जो देवी लज्जा, क्षमा और चेतना आदिके रूपमें सभी तत्वोंमें उपस्थित हैं, उसे अनेकश: नमस्कार है। ये नमस्कार भावजगतकी गहराईसे उगे हैं। वे सामान्य कर्मकाण्ड नहीं हैं। देवी दर्शनमें सामने मूर्ति होती है। देखनेमें ही यह मूर्ति है, दर्शनमें नहीं। हम मूर्त शरीरमें यंत्र हैं लेकिन भीतर मंत्र हैं। मूर्तिके पार विराट अस्तित्व है। अस्तित्व मां है। हम उसके अंश। अन्य उपासनाओंमें हम तरल सरल नहीं होते। मां उपासनामें सुविधा है। हम शिशु है और अस्तित्व मां। प्रकृति दिव्य है, इस दिव्यताकी अनुभूति दिक्कालमें नहीं रहने देती। प्रसन्नता आह्लाद या पीड़ा छिपाये नहीं जा सकते। हम लाख जतन करें-प्रसन्नता केन्द्रसे फैलकर परिधिपर आ ही जाती है। दिव्यताकी अनुभूति सामान्य प्रसन्ता नहीं है। दिव्यता सम्पूर्णताकी ही आभा और प्रभा है। यही अनुभूति 'नमस्तस्ये नमस्तस्ये, नमो नम:' में प्रकट हुई है।



अस्तित्वका सबसे बड़ा गुण है मां जैसा होना। मां स्वाभाविक ही दिव्य हैं। देवी हैं, पूज्य हैं, वरेण्य हैं, नीराजन और आराधनाके योग्य हैं। मार्कण्डेय ऋषिने ठीक ही दुर्गा सप्तशतीमें 'या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता बताकर नमस्तस्ये, नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमो नमः' कहकर अनेक बार नमस्कार किया है। मांका रस, रक्त और पोषण ही प्रत्येक जीवका मूलाधार है। हम मांका विस्तार हैं सो मां जैसी सर्जक पालक शक्तिके निकट होना आनन्ददायी है। सप्तशतीमें संसारकी सारी विद्याओंको भी मां देवी में देखा गया है विद्या समस्ता तव देवि भेदा। जो देवी सभी तत्वोंमें मांके रूपमें उपस्थित हैं, उसे बारम्बार नमस्कार है।

प्रकृतिमें अनेक रंग, अनेक रूप। बहरूपधारी वनस्पतियां, कीट-पतिंग, पशु-पक्षी, मनुष्य, नक्षत्र, चन्द्र, सूर्य और पर्वत। लेकिन सबके भीतर एक चैतन्य आत्म गतिशील है। गीत एक है और छन्द अनेक। गंगा एक घाट बहुतेरे। जल एक है नदी, पोखर, झील, समुद्र, बादल, वर्षा अनेक रूप हैं। अग्नि एक हैं। एक ही अग्नि तत्व सभी रूपोंमें रूप प्रतिरूप हो रहा है। यमने नचिकेताको कठोपनिषद्की कथामें बताया था अग्निर्थेको भुवनं प्रावेष्टो रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव-अग्नि है। वही अग्नि हरेक रूपमें प्रविष्ट होकर उसीके अनुरूप हो जाते हैं। प्रकृतिके सभी रूप एक ही चेतनाका प्रकटीकरण हैं। 'या देवी सर्वभूतेषु चेतन विधीयते' में सभी तत्वोंमें चेतनाके रूपमें उपस्थित देवीको नमस्कार है। सभी तत्व परस्पर अन्तर्सम्बन्धी है। महाऊर्जा एक है। वही दुर्गा है और वही महालक्ष्मी, काली या सरस्वती। हम अपनी सुविधानुसार प्रतीक चुनते हैं। छन्दस प्रिय वीणावादिनी सरस्वतीमें मातृत्व देखते हैं और शक्ति अभीप्सु दुर्गामें। धनप्रेमी लक्ष्मीके साथ जुड़ते हैं। लेकिन सारे रुपये प्रतीक या प्रतिमान हैं। हमारे चित्तका ही रूपायन। हमारी आस्तिकताकी दिव्य अभीप्सा। देवी उपासना प्रकृतिके मातृस्वरूपकी ही आस्तिकता हैं।

प्रकृति भी आस्तिक है। विंध्य पर्वत अतिप्राचीन है। यहां लाखों देवी उपासकोंकी भीड़ जुटती है। देवीको विंध्यवासिनी कहा जाता है। लेकिन इस क्षेत्रको एक और खूबसूरत नाम मिला है-विंध्यांचल। मुझे यह नाम बड़ा प्यारा लगता है। मांके आंचलका विस्तार है-विंध्याचल। आंचल आश्वस्ति है। हम सब शैशवमें बहुत रोये-चिल्लाये हैं। स्मरण है कि मेरी चिल्लपोंपर बड़ोंने डाटा तो और जोरसे चिल्लाये। मांने उठा लिया, सुबकने लगे। मांने आंचलमें लिया तो फिरसे मुस्कान। क्या प्रत्यक्ष इस भौतिक सत्यको अंधविश्वास कह सकते हैं। मैं स्वयं विंध्याचल जाता हूं। बहुत पढ़ा-सुना है इस शक्तिपीठके सम्बंधमें। हमारा मन निर्णायक नहीं है। नास्तिकता कहती है कि यह व्यर्थता है, लेकिन आस्तिकता उपासनाके लिए प्रेरित करती है।

देवी उपासनाका क्षेत्र व्यापक है। असममें है ही कोलकातामें काली दर्शनकी भीड़ लगती है। अव्यवस्थाका राज यहां भी पीड़ादायी है। जम्मूमें वैष्णव देवीकी उपासना शिखर पर्वतपर है। सभी शक्तिपीठ अपनी तमाम कथाओं और रहस्योंसे भरेपूरे हैं। प्रकृति सभी प्राणियोंकी जननी है। डा. राधाकृष्णन्ने गीताके भाष्यमें कहा है सभी जीवित रूपोंकी माता प्रकृति है। प्रकृतिसे हमारा सम्बन्ध मां और संततिका है। उपासना या भक्तिके प्रारम्भमें हम 'दो' होते हैं। एक माता और दूसरे हम। लेकिन सामान्य समझमें मां और हम दो नहीं है। प्रकृति विकासमान है। सांख्य चिन्तनमें विकार प्रकृति विकासका अगला रूप है। हमारा रूप प्रकृतिका ही रूप है। हमारे गुण प्राकृतिक हैं। सभी रूप प्रकृतिके ही रूप हैं। हम अपनी सुविधाके लिए उन्हें अनेक नाम देते हैं। दुर्गा, काली, सरस्वती, शाकम्भरी, महामेधा, कल्याणी, वैष्णवी, पार्वती आदि आदि। नाम स्मरण बोधमें सहायक हैं। असली बात है-मां। या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता, नमस्तस्ये, नमस्तस्ये नमो नम:। अंधविश्वास या आस्थाका कोई प्रश्न नहीं। विज्ञान प्रकृतिमें पदार्थ और ऊर्जा देख चुका है। समूची प्रकृति एक अखण्ड इकाई है। इस अखण्ड इकाईका नाम क्या रखें। कठिनाई बड़ी है। नाम रखते ही रूपका ध्यान आता है। रूपकी सीमा है। अखण्ड प्रकृति अनन्त है। असीम और अव्याख्येय।

मां प्रत्येक जीवकी आदि-अनादि अनुभूति है। मांकी देहका विस्तार ही हम सबकी काया है। मां न होती तो हम न होते। मां प्रत्यक्ष ब्रह्म है। आत्मीय ब्रह्म है। ऋग्वेदका सुपरिचित पुरुष है। यही पोषक पालक अदिति है। उसका स्पर्श सर्वोत्तम प्यार है। भारतीय परम्पराका ईश्वर या भगवान सुपरिचित शक्ति नहीं है। उसकी स्तुति भी 'त्वमेव माता-आप माता हैं' से शुरू होती है और त्वमेव पिता, बंधु मित्रतक विस्तार पाती हैं। अस्तित्वका सबसे बड़ा गुण है मां जैसा होना। मां स्वाभाविक ही दिव्य हैं। देवी हैं, पूज्य हैं, वरेण्य हैं, नीराजन और आराधनके योग्य हैं। मार्कण्डेय ऋषिने ठीक ही दुर्गा सप्तशतीमें 'या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता बताकर नमस्तस्ये, नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमो नम:' कहकर अनेक बार नमस्कार किया है। मांका रस, रक्त और पोषण ही प्रत्येक जीवका मूलाधार है। हम मांका विस्तार हैं सो मां जैसी सर्जक पालक शक्तिके निकट होना आनन्ददायी है। सप्तशतीमें संसारकी सारी विद्याओंको भी मां देवी देखा गया है विद्या समस्ता तव देवि भेदा। जो देवी सभी तत्वोंमें मांके रूपमें उपस्थित हैं, उसे बारम्बार नमस्कार है-या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमो नम:।

कृत्रिम बुद्धिमत्ताके खतरे

कृत्रिम बुद्धिमत्ताको लेकर कई तरहके सवाल खड़े किये जा रहे हैं। सवाल इसलिए उठाये जा रहे हैं कि कृत्रिम बुद्धिमत्ताके सकारात्मक और नकारात्मक असर हर क्षेत्रमें दिखने लगे हैं। यह 'डीपफेकका खतरा' बन सकता है।

❐ अखिलेश आर्येन्दु

सबसे बड़ा सवाल है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता चुनावमें जनमतको प्रभावित करनेके साथ-साथ लोकतंत्रको अधिक समावेशी और पारदर्शी बना सकती है कि नहीं। हमें यह ध्यान रखनेकी जरूरत है कि भारतका चुनाव आयोग भी कृत्रिम बुद्धिमत्ताके दोहरे प्रभावको स्वीकार कर रहा है। इसलिए दोनों इसके सकारात्मक एवं नकारात्मक असरको गहराईसे समझनेकी जरूरत है। तकनीकके नये दौरमें चुनावी प्रचारका चेहरा बदल रहा है। भारतमें चुनाव अब केवल मतदान केन्द्रपर जाकर मतपत्र या इलेक्ट्रानिक मशीनका बटन दबानेकी प्रक्रिया नहीं है। चुनावका वास्तविक मायने है। मतदाताको सही और विश्वासनीय जानकारी मिले, वह उम्मीदवारों और राजनीतिक दलोंकी नीतियोंको समझे और उसके बाद अपनी स्वतंत्र बुद्धिसे निर्णय करे। लेकिन डिजिटल युगमें मतदातातक पहुंचने वाली सूचनाका स्वरूप तेजीसे बदल रहा है। अब राजनीतिक दलोंके पास भाषण, समाचारपत्र, पोस्टर, टेलीविजन और जन-सभाओंके साथ एक ऐसा नया साधन भी है जिसकी शक्ति आने वाले वर्षोंमें चुनावी राजनीतिको गहराईसे प्रभावित कर सकती है। यह साधन है कृत्रिम बुद्धिमत्ता। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ऐसी तकनीक है जो कम्प्यूटर और मशीनोंकी मानव जैसी भाषा समझने, सामग्री तैयार करने तस्वीर और आवाज बनाने तथा विशाल मात्रामें सूचनाओंका विश्लेषण करनेमें सक्षम बनाती है। इसका सकारात्मक उपयोग लोकतंत्रको अधिक सुलभ और प्रभावी बना सकता है, लेकिन इसके दुरुपयोगसे मतदाताओंको भ्रमित करना भी पहलेकी तुलनामें कहीं ज्यादा आसान हो सकता है। यह लोकतंत्र और चुनाव आयोगके लिए बहुत बड़ी चुनौती हो सकती है। बदलते वक्तके साथ जनमत और जनमतको अपने पक्षमें करनेका ढंग बदल गया है। अब राजनीतिक दलोंको पहलेसे कहीं अधिक चैकन्ना और त्वरित निर्णय लेने पड़ते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ताके जरिये प्रभावशाली ढंगसे अधिक प्रचार-प्रसार कम समयमें करना सरल हो गया है। राजनीतिक दलोंका जनताकी समस्याओंके अनुरूप अपना सन्देश तैयार करना लोकतांत्रिक प्रक्रियाका हिस्सा है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ताके जरिये एक ही सामग्रीको अलग-अलग भाषाओं और स्थानीय संदर्भोंके अनुसार तैयार किया जा सकता है। इससे उस राजनीतिक दलका संदेश या संवाद स्थानीय लोगोंकी भाषामें उनकी चाहतके मुताबिक पहुंचाना आसान हो जायगा। इसी तरह एआईके जरिये स्थानीय लोगोंकी भावनाओंके अनुरूप सामग्री तैयार किया जा सकता है और लोगोंको प्रभावित कर उन्हें अपने पक्षमें करना आसान हो सकता है। लेकिन कृत्रिम बुद्धिमत्ताका राजनीतिक दल अपने निहित स्वार्थमें इसका गलत और बेहद खतरनाक इस्तेमाल कर सकते हैं। यह एआईके इस्तेमालका सबसे नकारात्मक प्रयोग है। मिसालके तौरपर एक झूठी सूचनाको अलग-अलग क्षेत्रोंके अनुरूप ढालकर फैलाना आसान हो जायगा। इसलिए चुनाव आयोगको यह तय करना होगा कि राजनीतिक दल एआईका इस्तेमाल कितना और किस सीमातक करनेके लिए स्वतंत्र हैं। एआईका असर आगामी चुनावोंमें कितना होगा और चुनाव आयोग राजनीतिक दलोंको इसके इस्तेमाल करनेकी सीमा किस तरह तय करता है, यह तो वक्त आनेपर मालूम पड़ जायगा, लेकिन एआईके इस्तेमालपर रोक लगाना मुश्किल होगा, क्योंकि सोशल मीडियाके दौरमें एआई हर व्यक्तिकी जरूरत बनती जा रही है। कुछ ही घंटोंमें वीडियो लाखों लोगोंतक पहुंच जाता है और लोगोंको उसके बारेमें प्रतिक्रिया भी आ जाती है। ऐसेमें एआईका इस्तेमालको कम करके नहीं आंका जा सकता है। जानकारोंके मुताबिक एआईका असर चुनावमें अकेले नहीं होगा, बल्कि सामाजिक माध्यमोंके साथ मिलकर इसका इस्तेमाल किये जानेपर इसका असर कई गुना बढ़ जायगा। लेकिन इसके संदर्भमें कुछ चिन्ताएं भी हैं। एआईसे तैयार की गयी भावनात्मक, सनसनीखेज और उत्तेजक सामग्री तैयार कर जनमनको गुमराह और भ्रमित करना आसान हो जायगा। चुनाव आयोग इस चिन्ताको कैसे दूर करेगा। सचाई कई बार साधारण होती है, जबकि झूठको सनसनीखेज बनाना आसान होता है। इसलिए चुनावके वक्त किसी वायरल वीडियो या संदेशकी लोकप्रियताको उसकी सत्यताका प्रमाण मानना खतरनाक होगा।

चुनाव आयोगके सामने कई तरहकी जिम्मेदारियां हैं। चुनाव आयोग एआईसे बनायी गयी सामग्री और भ्रामक सूचनाके दुरुपयोगको लेकर राजनीतिक दलोंको सावधान किया है। कृत्रिम रूपसे बनायी गयी सामग्रीकी स्पष्ट पहचान बतानेपर जोर दिया गया है। यह पहचान-चिह्न इसलिए महत्वपूर्ण है, ताकि मतदाताको पता रहे कि कोई वीडियो, तस्वीर या आवाज वास्तविक रिकार्डिंग है या कृत्रिम तकनीकसे बनायी गयी सामग्री। चुनाव आयोगके दिशा-निर्देशोंसे ही बात नहीं बनने वाली है। इसके लिए राजनीतिक दलों, सामाजिक माध्यमोंके मंचों, समाचार संस्थानों और आम नागरिकों-सभी को अपनी भूमिका निभानी होगी। राजनीतिक दलोंके सामने सबसे आसान रास्ता यह होगा कि वे कृत्रिम बुद्धिमत्ताको चुनावी हथियारके रूपमें इस्तेमाल करें, लेकिन लोकतंत्रकी नजरियेसे बेहतर रास्ता यह होगा कि इसका इस्तेमाल जानकारी और संवादके माध्यमके रूपमें किया जाय। यदि किसी नेताकी कृत्रिम आवाज तैयार की गयी है तो यह स्पष्ट होना चाहिए कि वह कृत्रिम है। यदि किसी भाषणका कृत्रिम एआईकी मददसे दूसरी भाषामें रूपान्तरण किया गया है तो उसकी भी जानकारी दी जानी चाहिए। खासकर विरोधी नेताके नकली बयान, नकली वीडियो या नकली आवाजका राजनीतिक लाभके लिए इस्तेमाल लोकतांत्रिक मर्यादाके विरुद्ध माना जाना चाहिए। एआईके बढ़ते चलनको देखते हुए चुनावको पारदर्शी, वास्तविक और लोकतंत्रके अनुरूप बनाये रखना चुनाव आयोगकी ही भूमिका नहीं है, बल्कि लोकतंत्र और संविधानकी दुहाई देने वाले सभी राजनीतिक दलों सहित जनताकी जिम्मदारी है कि वह एआईके गलत इस्तेमाल करने वाले राजनीतिक दलोंके किसी भी भ्रामक, अलोकतांत्रिक और संदेहपरक इस्तेमालको किसी भी तरह स्वीकार न करें। इसी तरह पत्रकारिताकी जिम्मेदारी कम होनेके बजाय बढ़ेगी। भ्रमक, संदेह और अलोकतांत्रिक एआई सामग्रीके सामने पत्रकारिताके सवाल-दर-सवाल सामग्रीके स्रोतसे संबंधी होने चाहिए। मिसालके तौरपर अमुक वीडियो कब बनाया गया। क्या इसका पूरा संदर्भ उपलब्ध है। क्या इसमें तकनीकी छेड़छाड़ हुई है। तथ्योंकी जांच अब पत्रकारिताका अतिरिक्त काम नहीं रहेगा, यह पत्रकारिताकी मूल जिम्मेदारीका हिस्सा बन जायगा। हम कह सकते हैं कि भविष्यमें किसी समाचार संस्थानकी प्रतिष्ठा केवल उसकी खबर सबसे पहले देनेसे नहीं, बल्कि खबर सबसे विश्वासनीय होनेसे तय होगी।

इसी तरह मतदाताओंको पहलेसे कहीं ज्यादा जागरूक होनेकी जरूरत है। गौरतलब है लोकतंत्रकी रक्षा महज कानून और संस्थाओंसे नहीं होती। देशके नागरिकोंकी जागरूकता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। किसी भी वीडियोको देखकर तुरन्त आगे भेज देना, बिना स्रोत देखे किसी सन्देशपर यकीन कर लेना या किसी राजनीतिक दावेको केवल इसलिए सच मान लेना कि वह बहुत लोगोंतक पहुंच चुका है, इस मानसिकता और आदतोंसे बचना होगा। यदि मतदाता जागरूक रहेगा तो कोई भी राजनीतिक दल एआईका दुरुपयोग करके उसे भ्रमित या गुमराह नहीं कर पायेगा। इसलिए मतदाताओंमें जागरूकता होते हुए इतना करना होगा कि महत्वपूर्ण राजनीतिक दावेकी पुष्टि विश्वासनीय समाचार स्रोत या आधिकारिक स्रोतसे करे। चुनावमें एआईके बढ़ते चलनने कई सवाल और चिन्ताएं पैदा की हैं। आने वाले चुनावोंमें सबसे गम्भीर समस्या यह हो सकती है कि जनताको धीरे-धीरे किसी भी वीडियो, तस्वीर या आवाजपर भरोसा या यकीन ही न रह जाय और यदि हर वास्तविक आरोपके जवाबमें यह कहा जा सके कि 'यह तो कृत्रिम बुद्धिमत्तासे बनाया गया है' तो वास्तविक घटनाओंको भी झूठ बनाया जा सकता है। इसलिए अभीसे सभीको इस दिशामें सचेत और चौकन्ना रहना जरूरी है।



शक्ति और ऊर्जा

❐ धर्मेश कुशवाहा

शारदीय और चैत्र नवरात्रीके दिन अपने-अपने समयावधिपर आते रहते हैं इन दोनों समयमें प्रकृतिमें वातारण एक-सा हो जाता है। इस समय सौरमंडलकी स्थिति एक जैसी हो जाती है, उसके बाद प्रकृति अपना स्वभाव बदलने लगती है। इन दोनों समयमें मां देवीकी उपासनाके लिए शास्त्रों एवं पुराणोंमें वर्णित करने प्रयास किया गया है। नौ दिनों की यह समयावधि ऊर्जाको संकलित करनेका एक अनुपम समय होता है ऊर्जासे प्राणी शक्ति प्राप्त करता है। भगवतीमें ममतामयी मांकी ऊर्जा है। भगवती एक संस्कृत शब्द है। भगवतीमें 'भग' का अर्थ है जो छह ऐश्वर्यसे परिपूर्ण होना जैसे- ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान तथा बैरागसे 'वती' संपन्न हो। जो पुराणोंमें वर्णित है, मां भगवती ऊर्जाकी मुख्य स्रोत है। ऊर्जाके बिना सभीका जीवन अधूरा होता है भगवती अराधना करनेका तात्पर्य है ऊर्जाका संकलन करना जब ऊर्जाका संकलन हो जायगा तो प्राणीके अंदर शक्ति अपने आप हो जायेगा, ऊर्जाके बिना तो शिवजी, विष्णुजी और ब्रह्माजी भी अधूरे है प्रकृति (भगवती) को स्त्रीलिंगकी संज्ञा दी जाती स्त्रीलिंगमें मां ही एक ऐसी शक्ति होती है जो बिना भेदभाव और बिना स्वार्थके प्राणीके अंदर ऊर्जाका संचार करती है। ऊर्जाका प्रवेश शक्तिमें परिवर्तित होती है उसका वही रूप धारण हो जाता है। मां भगवतीका आराधना करनेपर भगवतीके द्वारा ऊर्जासे संपन्न हो जानेसे अपने आन्तरिक गतिविधि सुचारू रूपसे चलने लगते है इसलिए ऊर्जाके संकलनके लिए शक्ति उपासना करना आवश्यक है। उपासनाका अर्थ है शक्तिसे सामंजस्य स्थापित करना और शक्तिको अपने अन्दर समाहित करना और अपने उत्थानके बारेमें सोचना। प्राणी उत्थानके बारेमें तभी सोचता है जब शक्तिके प्रकारको अपने अन्दर पूरी तरीकेसे समाहित कर लेता है जो तीन प्रकारके होते हैं पहला-क्रिया जिससे प्राणी कर्मके लिए विचार करता है, दूसरा-ज्ञान जब प्राणी क्रियाके बारेमें सोचता है, तब उस विषयके बारेमें ज्ञानका होना अति आवश्यक होता है, तीसरी शक्ति इच्छा है प्राणी जब दोनोंसे परिपूर्ण हो तो इच्छा शक्ति होना आवश्यक है। इन तीनोंको प्राणी जब मां भगवतीसे प्राप्त कर लेते है तो उसके जीवनके हर रास्ते आसान हो जा